

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ਨਾਮ ਅੰਗ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ

ASHA ARCHIVES

ਅੰਗ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ

903

CHIVES

[illegible]

५२

उले ४ स्तानं कर्षेन यगुस्ति तं मया । स दुर्दान्तिर्निर्कं सुखा नैपाल विदिकस्ति ॥
 ४ यगु स्तान्ता न प्रालोकः सर्वतिथि वगमरुतां या प्राति कुरु माहात्म्या दददव
 युसा दते ५ क दाने दता येन या गा नूद दुर्दयति कृथी व्या अठनं तस्ति ॥
 लस्या न्नसंगय ॥ तस्माद्या गा यय लेन कर्षु व्या तं दुदस्य वै । वगु ग म्माया नू
 पी गूलगि विमा नूहं न । तमा प्राह नू म स्तु स्य सदो गिव मना मय ॥ ६ ॥ गूलगि
 वि मा कु म्म सर्व पाये ४ युम चते । सर्वतिथि उला वा स दवर्षि गल संवि त शीद
 नं नन गि वा क्षे ल यूर्ति हि सर्व कामद । कर्षु संकाल संकर्षु सदा नन्द सना

ततश्चानिप्रकृतं न उग्रा मति लकलु न भामते ॥ यदवविद्या धल सिद्धि संवा
 गन्धर्वयक्षा वगर्कि न वा ॥ ४ ॥ स भानि ले यथा दकं लु संसाय यं कन पुन
 ४ यत्कि ॥ नीलकलु ततो दृष्टा गु वा ले यत् पुन ४ पुन मि यत् यत् कृ गु पि
 शिव सा कं म गच्छति ॥ मन सा कं म ला वा चा स फे ज न्म नि कि लि षं । द तं त ढि ल
 यं या ति ति ले क लु स्य द र्भ ना त ॥ उ त्मा क न व स द भु ष पि जी त पा य क र्म ना ।
 नीलकलु ४ दृष्टा तं र स्या या यो न मं ग य ॥ मन सा क्म य तं ला क गच्छति
 थ हि मा ल य । स फ उ त्म द र्भ पा यं तं मां न स्या कि त द न ना त । मन र्के उ त्म पा य

१

५५

विश्वे त्तानं द र्भ द ॥ त स्या त ऊ त्म नि वे रु स्यं जा र्त् ना स्या त र्भं भ य ॥ ५ ॥ धि क
 त स्या ज त ति यि सु ४ य ना म्बि के स द द यि । ति ले क लु न य जित ४ किं त स्य दा
 ने ऊ य क्षा म म्बि (थे ४ किं त स्य ना) मे र्भ व वा जि ना ज ४ सु य दृष्टा नू द म न ४ सु
 स ति (मे र्भ य न वि यु य स म पि र्भ व न ॥ य द्वा ता वा रु लं क र्भ न र्भ व वा य र्भ द स्य
 तं ॥ द्वा व द्वा लु पा ल ४ ल द ल ४ वि ना य क ४ त स्या द र्भ न मा रु न स र्वे या
 यं य म च्य त । ति ले क लु स ता व न द रु क र्भ व (म म्ब न) का व र्भ ह वा (मे व द
 द्वा (म म्ब गु व य थ ४ नि प्र अ वि य य स्या ग (व न न य न पु मि ४ नि ज र्भ द्वा

तस्य पितृनां साके धीक
 ५५

द ॥ ५ ॥
 चतुर्वेद यस्मात्ता पापि जीयते । तर्हि नायायि चक्रवर्तगिनि नन्दिति । ७
 वकञ्चनयादविगच्छेत्तत्तदुदयुति ॥ तिलगिनिगतदुसः यथयुमस्यजाय
 त । यद्ययदमहायुष्मि (मसहस्रं सदक्षिणं ॥ द्विजायुदलोचा प्रातिः यत्तयुष्मि
 तवाययात् । यत्तु कुलुचदलोत्तु गलमज्जसमरुवः लेखवस्तुचक्रुष्मि ॥ त
 थावासाभ्यक्षुर्क । हर्षशयिरुषुदययः स्ववंशयुचजायते । सर्वतिथीति
 तर्हि वस्तुवस्तुमयि मादिन । दमम्यादिपूतिथीषु सर्वतिथीसमागम । स्ना
 नमष्टदमर्गस्यैव । तर्हि नन्दानमादृति । यश्च सततं सततवृद्धिं निवेनामऊय

तथा आर्द्रकत्वात् तर्हि (र्थः तिलकः ॥ ७ ॥ यत्तु यत्तु वा ॥ त्वन्ति पितृवस्तु यत्तु स
 ख्या वायययत्तु तिथीषु चक्रवर्तुत्तु यथागच्छपिथदकं । यत्तु संचक्रवर्तु
 वावाहतिथीभवचः वावातसिनेमिष्यदवयययागवस्तुकायः ॥ त्वन्ति
 दिनतिथीतिः गजाशानितस्तथाज्याध्यादिपूनीसकः । त्वन्ति वस्तुमादिना
 कया ॥ यदादि सवसासुलिः यत्तु नादितथागमाशानितवगनीहतिथीतिः ति
 लकः ॥ यत्तु तर्हि लेखकः शायदवता सर्वश्रवणायुष्ययत्तुति । स्नातुमाया
 ति तर्हि (र्थः तिलकः ॥ ८ ॥ दक्षिणं ॥ हर्मजयश्चक्रवर्तिवाक्कतानाश्चपूजन

१
आतिथं दव यूजाऽप्यु ताजना चादनं तथा। दिप दान शु कर्तव्यं चेष्ट दानमनक्त
कं ॥ तामुस्य ताजनं कृत्वा तत्त (यदि यवलि कां।) मष्टननस मायु कां पु का ल्य
तं ददय यं अ नूय वा न्न न वा न्नू ल्वा न ता मि यु वि। म ल्यु न भा नू दायु र्धं सु व भू दि
निर्मितं या निवेदय अ तेन दानेन ल र तं मि व सा के सु खा स्य न ॥ सु पु सा या
दि क कि ष्टि शु द्ध दय य त म द ॥ तद त्रि डा त व चा पि चोक्त स इति मा यू या त
॥ सु भू दि द ति तं या शु वृ ष रं चार्थ य न्म द ॥ सर्व भू यु द्य दान दत्ता य ह ले
तद वा यू या अ म द्ध द श द्ध या व सु य भि द पं त म म उ य य ॥ तं गु या व ता सं ख्या

तापि च यव भ म अ य य यु दि य त व सु तिल क लू द द म द ॥ तनु म या व न
भा र गृ द्ध ते शु द्ध या य दि। ज स द्ध या यि तं कि ष्टि न गृ द्ध मि ति नी ल उ ॥ ने
व द्ये वि वि वे स्ता ते ४ य थो द्ध ये दी ये वि ल य ने ४ गी त वा द्या दि भु ज ये नी व क
लू द द श मि के ॥ क न्ना रु मा न वा य सु क लो र कि य न य ल। क ल्य को ति म रु ध
नि व स म म सं ति। यो ६ मू किं पु या नि म नू जा न सां ख्या न व डि। ना ४ पि त व त ह्य
ह य नि ह क ४ क ल्य म ते न यि ॥ य भू द वि मा रु वि द्यां या उ य द्ध द र्श नि। य
व द्ध रा पि पि शु द्ध त वा न ग द्ध वि वा ल य ॥ वे सु व वा थ वा म क्ता या उ य न्म द्ध

यानिका। सर्वपायवितिमुक्ता विष्णु भाकं सुगच्छति॥ मरुमावगुगझया मु
 यस्याववि (मयत ४) तर्ह स्नातं यंक रूयं चातीवद्वदं निव॥ निलकल्लु
 यस्तानंदलं रीदिवीकसा। ॐ प्रयावउनु सांकाकथनगनति॥ अन्य
 तिथीति गमने शुभा ने ताद (मरुवे नूय थत र्थ गमने रुव ऊं नार्तिव (म
 यता यसी नृसि मरु ग स्या द्या राग्य समत्वतं॥ तस्येवडा यत वरि नी
 लकल्लु स्य दधीन। मधे सि के गाव दधिल्ले छ सी नगनदिनि। मना नडा
 यततस्य निलकल्लु द्य द्यत दल्ले सर्वतिथी नी निलकल्लु वगमहन

मदक्यापार्यनदवी निलकल्लु वगमहन॥ उताइत समायकं चन्द्रादुक्त (मय
 वं निलकल्लु द्या नूरुं ललयाति मरु वलं। दवद वं सुन (गु दं सुवोह नलद
 रितं वल्ल नीलकल्लु दं च दिव्य व सुनलं दतं॥ नीलकल्लु माहादिकं सुयका
 टि समयतं। गिनं दग रुजं च सर्वे व ले ४ स। मरुतिनं। कयाव मावि नं च वय
 चवकुं मरुवनं॥ यी नाकिनं ४ लयाति दवद वुजगु द्य॥ जि का (ग्रव दति च
 यंददय सुं उग रुयं॥ ममक यल्लु स नि कं सर्वदवा (गुर्य यनं सुफ याताल
 पाद ४ यो मक गं गी वाचनं नमाति निलकल्लु सु सर्वपाय रुव यन॥ उव सु

स्यामहादेवं सर्वपापं यमचरत ॥ विना उत नीलकण्ठं दुःखमिव ॥ तत्रैव च या
 सर्वतिष्ठति सत्रयाचितं बुद्धाविषु चन्द्रश्च महायातुर्मस्तुता ॥ संखड्ड
 हितिर्थाकारोनेरुविमर्दलेशयते देहालवील्लोचो वादिने चैव सुस्तथैव
 काविषु ५४ उग्र आदिता ये मन्त्रगण ४ गन्धर्वीलाकयात्रा ४ सिद्धमुद्रक
 किन्नरा ४ अलिमादिगुणयुक्ता यथान्यतत्तदग्निन ४ सावित्री यावोतलक्ष्मी
 सविमनादि हि सुखा ॥ सर्वोत्सांदवयत्येव सर्वोत्सेवयविवता ४ नतवेदव
 संप्रदाय ४ ममदर्शन ॥ काश्चिन्न ४ तित्थनीयवितादवी नीलकण्ठं स्यवेदुदः स्व

पूरानमस्तु भूना कुरुकुरुविग्रह ॥ तस्मै सलततदवी नीलकण्ठदर्शनात् ॥ अ
 कलावसाहामाहं सलततानु संमया ॥ ५४ उवाच ॥ माहात्म्यं ४ नतं यमुनीव
 कण्ठस्य वीर्येण ॥ तस्यानूदयववास ४ सत्त्वान कामानवायुयात ॥ ॥ ५५ तित्थ
 न्यपला ५ उरुसख ५ विवमाहात्म्य ॥ नीलकण्ठमहिमानवर्धुनी ॥ ५६
 अथ भूत ॥ ॥ ५७ नमो विवाया ॥ वक्रावाच ॥ नमस्तु खं विवयाक नमस्तु नैकव
 दूषे ॥ नमो ४ पिनाकरु साय ५ वक्राह सायवे नमो ४ साख्याय चैव यागमय ५ तग्रामा
 यवे नमो ४ ॥ नमो ४ लोकेनाथयत्नानां चतय नमो ४ ॥ नमो ४ सुनासिर्दुर्गचमा

म सूर्याग्निचक्रुषा॥ वक्राधैववृदायविष्णुधैववतनमः॥ मत्तथाङ्क विनासा
 यः कोलकावायधैवतमः॥ वृदायवसुधैवतायः धवधवायवरुणाय॥ कपर्दिनकना
 नायः सुक्रनायरुनायव॥ कपालिधैवविष्णुयायः निवायववदायव॥ शीघ्रवदु
 मखद्यायः मातृनायतयनमः॥ लकायधैवशुक्रायः मकायकवलायचनमः॥ १३
 ४कपालवरुणायः दिग्गलायनभामुतः॥ अग्निधैववाग्रायः विद्यासाधनकच
 रुषे॥ वज्रधैवसुखायः नमस्कृत्यकथानय॥ नित्यायधैवनित्यायनित्याय नित्या
 यधैवनमः॥ ४विन्यायधैवविन्यायविन्यायधैवनमः॥ वीकायधैववीकायवीका
 यधैवनमः॥
 विष्णो
 यका

यधैवनमः॥ लकातामार्हिनाभयप्रियः नावायसायव॥ ७मायियायसर्वा
 यः नन्दिवक्रागनायव॥ यदमासादमासायः सुधुमं वृत्तायव॥ वक्रव
 यायः शुक्रायः दक्षिणववृथिन॥ वथिनवलिनेधैवः उतिनवुक्रवावि
 मगुरुसामन्यायववृथायः श्वनायव॥ लोककृत्यनित्यायः धृन्दायववृत्ता
 यव॥ ७७धैवमादिचक्रिणमुत्तिमुत्थिनभामुतः॥ स्थितोर्वहंमुत्थितमंचः लव
 कर्मात्यसादनविनासमथ॥ हलाकुहकिं ममधवधवयुसिदगङ्गाधनी
 धितकंग॥ सुधासिथामतिसयातिवित्तनहिः ययुर्वकिं मयेतिवृड॥ ॥

ॐ ति श्री नीलकण्ठ मुनि संयुक्ता ॥ गुरु ॥ अथ सिद्धि वसुकी यात्रा सुवृ
 द्धि वसुधनाय ॥ वृद्धि वसुधनाय ॥ वृद्धि वसुधनाय ॥ वृद्धि वसुधनाय ॥ वृद्धि वसुधनाय ॥
 सर्व भागिक वंशुर् ॥ आयुः पूजं च कामं च ॥ लोभं भक्तिं तिवधनं ॥
 श्री नीलकण्ठ यतम ॥ ॥ सुन्दर वाच ॥ अथ लोभ वतां (पुष्टः) भादृष्टा
 वसुधनाय ॥ स्नाना स्नान वतां नृणां यत्नं मायि विद्युच्चि ॥ न कश्चिर्लसमाय
 यं नृणां भूमि युक्तां अनृक्ष यकु मंते याः स्नान रुक्ता निवन्निता ॥ जिह्वा
 (यव रुक्तां) नीलकण्ठ ॐ तिद्धि ॥ अथ विष्णु य विष्णु वास गच्छति यव रुक्ता

वसुधनाय ॥ अथ विष्णु य विष्णु वास गच्छति यव रुक्ता ॥ अथ विष्णु य विष्णु वास गच्छति यव रुक्ता ॥
 सप्त रुक्ता यार्थः श्री नीलकण्ठ उद स्नातु मरुं गमिष्य ॥ ॐ ति संकल्प्य गृह्णा
 दुर्गं ॥ अथ वंशुर्गं गम स्नान विधि ॥ वंशुर्गं गम उल स्नात्वा तिर्थ ग ४ यां (गं)
 पुं गम विधि ॥ ततः कृष्ण दकं कृयात्सं कल्पं च युग्मं यत ॥ नत दादि वृत्तीथ
 पुं यथ कामं न व ४ सु वि ४ ॥ ॥ कृष्ण ति लज्जला न्यादाय ॥ अथ विष्णु य विष्णु वास गच्छति यव रुक्ता
 क (गम) ॥ अथ वसुधनाय ॥ अथ वसुधनाय ॥ अथ वसुधनाय ॥ अथ वसुधनाय ॥ अथ वसुधनाय ॥
 लकण्ठु पीत्यर्थं वंशुर्गं गम यां स्नान मरुं क विष्य ॥ ॥ ॐ ति संकल्प्य स्नाया ॥

^{१२}
 तस्यां च स्नानमाकुन नूड प्राक मदि यता हय क वा चेत नन्द र्कन वामं त गुरु कीत ॥
 प्रभां धाव्यं तथ वील तं सर्व मद्यं सूर्यत ॥ तता हय ४ म मागय वे हय यन
 न क मात । नूड ४ नूड खाता चा रु व ती (थ ह न य द ॥ स्नात्वा उ द्या म दाय कानूड गं
 म उ नारु म । व द्या य विनिमूक ३ स या ति नूड म न्दि नं ॥ । अ द्या दि अ म
 क (म ग) अ म क ग म्मा व म्मा गु क दा सा हं स क त पा त क नि व रि छा ला नूड म न्दि
 न्या फि छा ना धी ति स क ण्णु यी ल्य थं नूड गं म उ न स्नान म हं क वि ध्य ॥ ॥ हय
 यत न नी ल दा त हा मा र्च न म द्या क वा ति त ह नं सर्वं ल द्या ग क ति धे ध व ॥ ॥

^{१३}
 नयेदे श्व त वा म त्वा यु का र्थ व नं य न ४ क र्थ ति भू त गं म र्थ ती र्थ या म । अ
 यो ज न धा ॥ अ द्या द्या दा अ म क (म ग) अ म क स म्मा व म्मा गु क दा सा हं
 मा हा दि नि व रि यि र्थ क सूर्य स मा न व लु या न क न ण क सा र्ग पा कि छा ना धी
 ति न क ण्णु यी ल्य थं नी ग न गं म स्नान म हं क वि ध्य ॥ ॥ त ग स्ना त्वा दि व र्थ ति
 सर्व या र्थ वि व र्जि ता ४ भा रु क भू क म लु धु यान न सूर्य व च सा ॥ ॥ हय
 क वा च तं त स र्व म द्य स म्मा ॥ त ता व उं नी व ण्ण व स्ता गु व न द व य न ४
 अ द्या द्या दि अ म क (म ग) अ म क स म्मा व म्मा गु क दा सा हं नि व वा क या फि
 दा त

दानाद्यानि लकृषीयर्थं जीवन्मूर्ति स्नानमहं करीष्ये ॥ अथितीर्थततः स्नानं
 जीवन्मूर्ति स्नानं अग्निविद्वान्मातुन सर्वपापेषु मर्त्यते ॥ ॥ अथया
 दि अमृत (गुरु) अमृतकर्म मूर्तिवर्मा गुफ दाभाहं अतर्जु नार्जित सतकनया
 तकनिवृत्ति दाना लउदन म क्ता द्यावप्युर्वके अर्द्धग यत्न मनयुर्वके जी
 म्नादी दग्नेन महे करिष्ये ॥ ॥ जीवन्मूर्ति ततागत्वा यद्यन्ना वाहे यद्य
 ने। ममन विधिया निर्व साक्षाद्भुक्ती मकी युदायक ॥ ॥ अथयादि अमृत
 (गुरु) अमृतकर्म मूर्तिवर्मा गुफ दाभाहं यति यदवाड धया ४० मधुज न्यरु

१७

१८

तसमस्त (गुरु) सद्गुदातक त्यादान सद्गुज न्यरु व लुत्तु न सद्गुदातक
 व समस्त सर्व तीर्थ स्नान उ न्या स मरु व सर्व दान उ न्यरु व स मरु वा वा की का
 मनया जीनी लकृषीयर्थं जीवन्मूर्ति स्नानमहं करिष्ये ॥ ॥ तत्त्वार्ग
 म्मतनं यात्री दधुव त्यात यत्कि नी। या (गुरु) नमः शिवायति वा र्द्धगेशु लमहि
 दि ॥ ॥ जीवन्मूर्ति स्नानं समा ली द्या विनाय कानि के वउ अतं या थ यद्व न नत्वा य
 न विद्यु यत्नयंत ॥ नमो ली द्या दवा र्या यर्ग क नाया हि नाहित। ह नं वा य म
 (गुरु) मय नृडा ह्यो या नी न नमः ॥ ॥ विद्यु नाज नमस्तु जीवन्मूर्ति सय मधु

१८

२०

नंद
 नृने न्निफ कंद वंदिवा वसे वसै हतै । तिन कलं महा कानं सूर्य काति समय
 है । जीने नृद गउ ऊं दिव्यं नाग सङ्गा यविति न । दुखा वारै महा दवं सर्वाय
 ॥ यत्प्राप्ति न ॥ विदु ती हृषितं दवं यत्प्राप्ति मूषु साप्रि न । यि ना किं महं ग
 नं वन्यु दंज गकु नं । योगि गम्यं महा सुखं सर्व दद मुखा गय । जि द्वा (ग्र स
 नीं वदा ॥ दद ये सु वत वर्य । ॥ प्राप्ता (ग्र मन या द वा सु सि द्वा य द वा द सा
 या द या य स्या या ता नं आ का (ग्र म सु क त था । ल्क न्द्र या ग्य दि स ४ स द्वा च द्वा
 को य स्या ना च नी ॥ ॥ वय न्द्र ग्य ति द्द ति । त मि र्गं द व या यि त ४ व द्वा वि

पुष्टदवाष्ट सहायां यनिधं द्वि ता था व्या त्वावेव म्मदादवं क (पुष्ट क्कान
नो म्मदा ॥ ॥ तिलक ५५ द नूनं स्तानं क य्या द्वि व द न ॥ ॥ कृष्णतिवज
लान्वादाय अश्यादि अमृक (मृज अमृक ॥ म्माच म्मा शुफ दाभादे आ
तीक्ष्णमादिसक व य हू सर्वतिथि स च दान स च ध म्मा न्य न्न य (काठियुलि
पूष्णवाकि य ध्व क म्फ उ म्मा डि त सकं महा यात क क्का यात कादि निवर्हि य
ध्व क सार्ध हो म्मत्त र व न य ध्व क सक व म्महि म्मु ल हा (म ल व काली न क
ल्य काठि स हू स संख्या व द्दि न का व स म्का व स म्का व वू ड ला क म्महि त

श्री १००० मग

न। ऊव विष्णु जीव न। असाय द्या दम आके निल सा

श्री १००० मग

ASHA ARCHIVES

श्री १००० मग
903

ASHA ARCHIVES

सुप्र२॥ ॥ ॐ वज्राय नमः ॥ ॐ शक्राय ॥ ॐ दध्मय ॥ ॐ खड्गाय ॥ ॐ
 यासाय ॥ ॐ ध्वजाय ॥ ॐ गदाय ॥ ॐ ग्रीवालाय ॥ ॐ कवचाय ॥
 ॐ चक्राय ॥ ॥ ध्या ॥ वनस्थितिं भास्यतां गंधागंधमरुमं आ
 युय ४ सर्वद्वानां ध्यायं युति गृह्यतां ॥ ॥ दिय ॥ लभेव पृथिवी आ
 तिर्वाय न कास भव च लभेव आतिषा आतिर्दिधायं युति गृह्यतां ॥ ॥ दन ॥
 ॥ नेध ॥ अन्नं युजायति विष्णुः नृधामा राक्षसं शिव ॥ अन्नं अक्षुद्रं सायने
 नेधं शंयति गृह्यतां ॥ ॥ ताम्रं ॥ सर्वं सो राग्यं दनाथः वाजपोय मम

यतं । वागभो कविनि स्मर्यं ताम्रं वं युति गृह्यतां ॥ ॥ नृता निगन्धयुष्यध
 यदिय ताम्रं नेवि शादि ॥ श्री नीलकण्ठाय नमः ॥ ॥ अर्घ्यं ॥
 अश्रयादि ॥ मिवाय सर्वदिताथयः सर्वयाय रुवाय च । मिवाय सादनं रुक्म
 गृह्णान् धर्मिदं विरा ॥ ॥ मधुवज्रयस्तु ॥ ॥ ॐ नमो नीलकण्ठाय
 ॥ दध्मवाच ॥ ॥ ॐ नमः ४ युगवाख्याय ऊलमर्थेन नमः ४ ॥ ॐ मिवायः
 मिवायैवः मिपि विष्णवे नमः ४ ॥ ॥ ॐ नमो नीलकण्ठाय निल अनाय
 मविनः । निल लाहि तदहायेति विष्णवे नमः ४ ॥ ॥ नानाय नाय न

नमो नमो नमो नमो नमो ॥ १ ॥ आनन्दसुहृदो यो च उगदा नन्द दायिने ॥
॥ २ ॥ आर्यायादसमस्तु भेदाच्छायायुष्मयिने ॥ अस्मिदुदुगदु सुहृदो ॥
सनायवेनमः ॥ ७ ॥ यत्रवत्तु स्वययाये यत्राये यलमानन यत्रायेनयु
तीताये यत्रभयवेनमः ॥ ८ ॥ यकाययकनृपिले यकायक स्वयपि
न ॥ यकातामयत्राये यकनृपायवेनमः ॥ ९ ॥ जीवनाभयजीवाय
जीवनाख्यायवेनमः ॥ जिविना जिवजिवि न्ये जिवनायेनमानमः ॥ १० ॥
नीलकण्ठाय नृजाय उग्रदवायनेनमः ॥ ११ ॥ अलद्वे मद्राद्वे यस्मिन्नायन

भामुते ॥ ४ ॥ नीलनरुषितग्रीवमद्रादवायनेनमः ॥ सुदुहृदिकसंकाश
धम्मवायनभामुते ॥ ५ ॥ हतानामपि हताय हतयायेनभामुते ॥ हता
नाहृदिदाये च हतमयेनमानमः ॥ १० ॥ धर्मेश्वराय हिमाय सुदीहि
हृदिनामः ॥ सुवेष्टय मद्राद्वे उविहतेनभामुते ॥ ११ ॥ अजसनेन
संसावत्रकायनमानमः ॥ अजसने मद्राद्वे वद्रकायनमानमः ॥
॥ १२ ॥ स्कन्द उवाच ॥ यथोक्तिचमाह्वयं नीलकण्ठमुतिं सदा ॥ नीलक
ण्ठ उवाच ॥ त्वया प्रयुक्तं लानि ते ॥ १३ ॥ ॥ निशी स्कन्दपरा लहिम

१ समस्त गुरु ५ वेगवत् त्रिगुण लक्षण कुरु या क
पात्र को या म विन ग्व ७० मून लू या ग्व २ देवद
वृथं कादु ३ ग्व ४ हियून मद धान विहा ५

१ समस्त गुरु १ प्रादयव वि १ लक्षण कुरु या काया
लू या वि ७ मद कन मद

१ समस्त गुरु १८ लक्षण द व वि १ लक्षण कुरु या काया
म विन लू २ लू या धय व लू न मद वे १ के १ लू या मद

१ समस्त गुरु २ अलक्षण कुरु १ लक्षण कुरु या क पात्र
काया लू या के न किया क मद

समस्त नर नारवेष्ट कृष्ण लक्ष्मण यान काया
ल ज्ञाना या हान मद्

श्री २ म द्, श्री १ म द्, ३। द्।

सम्य नरुन कृष्ण कृष्ण रात्रया क
पात्र कोश्या ॥ १ ॥ रात्रि पक्षात् ॥ १ ॥
माहात्या विद्या ॥ १ ॥ इमं कथा ॥

१ अखं नमः कालं यावत् नक्षत्रं

का शि

नमः ॥ १५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

१५ नमः ॥ श्री गुरु वन नमः मन्त्रान्न नमः ॥ प्र ह्रीं नमः

का का वा जी

गो गतो सायराभ

हृदय

स्वामी जी ॥ सारबो प सा ज हु राजल ना सा

मरथ

सारबो प सा ज अ उ सकु २२
पिर ॥ ग ॥ १२

२ स्वामी जी त मा रासी र बाकि रिय पात
राकासी धी मानसि ह स्व मा रासित ग ॥ ॥
रो थ ॥ ॥
स्वा

मर्चा का यका वाज्या वाट ज म्या छुट्टि या का जे ठा कां छा वावु दाज्य भाइ छोरा भ
ति जानाति र जे ठि कां छि म्या मा भाउ ज्यु वु हारि ह रूप नि छन मर्चा का छो रि
पनि छन वावु म्या मा म म्योर अवताली प म्या वावु आ माले छो रि लाइ सा
छि सो तारा वि का ग ज ले खी दिया कोर हे छ म्या त्यो अपताली छो रि ले पाउं छ
यका वाज्या वाट ज म्या का ज्य ठा कां छा वावु दाज्य भाइ छोरा भती जानाती र ज्ये
ठि कां छि आ मा भाउ ज्यु वु हारि ह रूप ले पाउं देन न का ग ज प न ले वि दिया को य

निरहे न छ म्या छो रि ले पाउं देन न मर्चा का यका वाज्या वाट ज म्या का जे ठा
कां छा वावु दाज्य भाइ छोरा भती जानाती र जे ठि कां छि आ मा भाउ ज्यु वु हारि
ह रूप ले अपताली वानु पाउं छन

श्रीसिद्धि श्रीसिद्धिविनायकाय नमो ॥

श्रीएवा लिसम्कनयानिमो ॥ श्रीगुण्यका सि ॥ तन श्रीकूल देवता
श्रीहिसम्कनयानिमो श्री ॐ दायनमो